Dr. Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – 5
CC- 5

LIBERALS
(उदारवाद की अवधारणा और आधुनिक राजनीतिक विचारों में उसका विकास)

उदारवाद आधुनिक राजनीतिक चिंतन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विचारधारा है, जिसने विश्व के राजनीतिक और सामाजिक ढाँचे को गहराई से प्रभावित किया है। इसका उदय यूरोप में उस समय हुआ जब मध्यकालीन सामंती व्यवस्था, निरंकुश राजतंत्र और चर्च के प्रभुत्व ने व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया था। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में वैज्ञानिक चेतना, बौद्धिक जागरण और प्रबोधन आंदोलन के प्रभाव से यह धारणा विकसित हुई कि मनुष्य केवल राज्य या धर्म की सेवा के लिए नहीं, बल्कि स्वयं में एक स्वतंत्र और विवेकशील प्राणी है। इसी बौद्धिक पृष्ठभूमि में उदारवाद का जन्म हुआ।

उदारवाद व्यक्ति को समाज और राज्य की मूल इकाई मानता है। इसके अनुसार राज्य का अस्तित्व व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा के लिए है, न कि व्यक्ति को नियंत्रित करने के लिए। उदारवादी चिंतक यह मानते हैं कि व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने, धर्म अपनाने, संपत्ति रखने और जीवन के

निर्णय स्वयं लेने का अधिकार होना चाहिए। इस विचारधारा में कानून का शासन, संवैधानिक व्यवस्था और सीमित सरकार पर विशेष बल दिया गया है।

बीसवीं शताब्दी तक आते-आते उदारवाद केवल पश्चिमी राजनीतिक विचारधारा न रहकर एक वैश्विक अवधारणा बन गया। उपनिवेशों में राष्ट्रीय आंदोलनों के दौरान उदारवादी विचारों ने स्वतंत्रता, समानता और अधिकारों की माँग को वैचारिक आधार प्रदान किया। भारत में भी राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उदारवादी परंपरा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। महात्मा गांधी और डॉ. बी. आर. अंबेडकर दोनों ही आधुनिक उदारवादी विमर्श से जुड़े हुए थे, किंतु उन्होंने इसे भारतीय सामाजिक वास्तविकताओं के अनुरूप ढालने का प्रयास किया।

इस प्रकार उदारवाद को केवल एक पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण के रूप में समझना आवश्यक है, जिसकी भारतीय अभिव्यक्ति गांधी और अंबेडकर के विचारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।